यतेमहि स्वराज्ये

ISSN : 2249-2976

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Year 8
Issue 32
April-June 2019
www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor 4.005

(Art, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)
(Indexed & Listed at Copernicus, Poland)
(Indexed & Listed at Research Bib, Japan)
Indexed & Listed at Indian Journal Index (IJINDEX)
(UGC Approved List No. 41241)

(International Refereed)

Pramāna

Research Journal

Editor-in-Chief
Acharya (Dr.) Shilak Ram

Acharya Academy
Bharat
ISO 9001:2008

Pramāna
International Refereed
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
UGC List No. 41241
Impact Factor : 4.005
Year-7, Issue-29(II) (July-Sept. 2018) (Page No. 51-55)

कुरुक्षेत्र के तीर्थ स्थलो में अमीन और भोर तीर्थ का महत्व

गौरव गोयल
प्राचीन भारतीय इतिहास
संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
आर० के० एस० डी० कॉलेज,
कैथल (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

कुरुक्षेत्र किसी एक स्थान विशेष का नाम न होकर 260 वर्ग मील के घेरे में फैले हुए भूखण्ड का नाम है। धार्मिक महत्व के नाम कुरुक्षेत्र प्रदेश के सैकड़ों तीर्थों की चर्चा तो प्राचीन साहित्य में हुई है । किन्तु यह विश्वास करना सम्भव नही है कि इस पुनीत प्रदेश में कोई ऐतिहासिक नगर ही नहीं था। इस प्रदेश के किसी भी नगर का प्रथम विवरण उस काल में मिलता है । जब थानेसर (प्राचीन स्थाण्वीश्वर) उत्तरी भारत के एक विशाल साम्राज्य की राजधानी बन चुका था। पुष्यभूति वंश के राजाओं के काल में इस राजधानी का बाणभट्ट एवं विदेशी यात्री द्वारा विवरण प्रस्तुत करना स्वाभाविक ही है। कुरुक्षेत्र के अड़तालीस कोस के क्षेत्र में 134 तीर्थ विद्यमान है जिसमे कुरुक्षेत्र जिले में इकतीस विद्यमान है जो इस क्षेत्र के धार्मिक महत्व का व्याख्यान करते है ।

मुख्य-शब्द : अक्षौहिणी, पुरास्थल, पुराशिल्प, मृदभाण्ड

भूमिका

कुरुक्षेत्र किसी एक स्थान विशेष का नाम न होकर 260 वर्ग मील के घेरे मे फैले हुए भूखण्ड का नाम है। धार्मिक महत्व के नाम कुरुक्षेत्र प्रदेश के सैकड़ों तीर्थों की चर्चा तो प्राचीन साहित्य मे हुई है ।किन्तु यह विश्वास करना सम्भव नही है कि इस पुनीत प्रदेश मे कोई ऐतिहासिक नगर ही नही था। इस प्रदेश के किसी भी नगर का प्रथम विवरण उस काल मे मिलता है ।जब थानेसर (प्राचीन स्थाण्वीश्वर) उत्तरी भारत के एक विशाल साम्राज्य की राजधानी बन चुका था। पुष्यभूति वंश के राजाओं के काल मे इस राजधानी का बाणभट्ट एवं विदेशी यात्री द्वारा विवरण प्रस्तुत करना स्वाभाविक ही है। कुरुक्षेत्र के अड़तालीस कोस के क्षेत्र में 134 तीर्थ विद्यमान है जिसमे कुरुक्षेत्र जिले मे इकतीस विद्यमान है जो इस क्षेत्र के धार्मिक महत्व का व्याख्यान करते है ।

कुरुक्षेत्र से लगभग 8 कि०मी० दक्षिण-पूर्व मे स्थित अमीन अति प्राचीन स्थल है। जनश्रुति के अनुसार यह स्थान महाभारत तथा अभिमन्यु से सम्बन्धित है। महाभारत तथा पुराणों मे इस स्थान का उल्लेख अदिति वन के नाम से हुआ है। इस स्थल की प्राचीनता की पुष्टि यहां के प्राचीन टीले से प्राप्त चित्रित धूसर मृदभांडो की प्राप्ति से भी होती है जिन्हे महाभारतकालीन माना जाता है। ई०पू० पहली दूसरे शताब्दी अथवा ई० की प्रारम्भिक शताब्दियों मे इस स्थान का महत्व यहाँ से प्राप्त कला विशेषों से होता है।